कनकधारा स्तोत्र पाठ – Kanakadhara Stotram in Hindi (पूर्ण पाठ हिंदी अर्थ सहित)

॥ श्री कनकधारा स्तोत्रम् ॥

॥ श्री हरिः ॥

॥ श्लोक 1 ॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥१॥

हिंदी अर्थ: जैसे भ्रमरी (भँवरी) अर्धखिले पुष्पों से सुशोभित तमाल वृक्ष का आश्रय लेती है, उसी प्रकार जो माँ लक्ष्मी रोमांच से सुशोभित भगवान श्रीहरि के पवित्र शरीर पर सदा विराजमान रहती हैं और जिनमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य का वास है - वह मंगलदेवी की कटाक्ष-लीला मेरे लिए मंगलकारी हो।

॥ श्लोक 2 ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥२॥

हिंदी अर्थ: जैसे भ्रमरी बार-बार कमल पर आती-जाती रहती है, उसी प्रकार समुद्रकन्या माँ लक्ष्मी की वह मनोहर दृष्टि जो प्रेम और लज्जा के भाव से भगवान मुरारी के मुखकमल पर बार-बार जाती और लौटती रहती है - वह दृष्टि मुझे धन-संपत्ति प्रदान करे।

॥ श्लोक 3 ॥

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष –
मानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध –
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥३॥

हिंदी अर्थ: जो इन्द्र के पद का वैभव प्रदान करने में समर्थ हैं, जो भगवान मुरारी को भी परम आनंद देने वाली हैं, और जिनके नेत्र नीलकमल के भीतरी भाग के समान सुंदर हैं - माँ लक्ष्मी की वह अर्धखुली दृष्टि एक क्षण के लिए मुझ पर भी पड़े।

॥ श्लोक 4 ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द –
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥४॥

हिंदी अर्थ: जब माँ लक्ष्मी आनंदकंद मुकुंद भगवान को अपने निकट पाती हैं, तो उनकी पुतलियाँ और भौंहें प्रेम के वशीभूत होकर तिरछी हो जाती हैं। शेष-शयन करने वाले भगवान नारायण की अर्धांगिनी माँ महालक्ष्मी के ऐसे मनोहर नेत्र मुझे ऐश्वर्य प्रदान करें।

॥ श्लोक 5 ॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥५॥

हिंदी अर्थ: भगवान मधुसूदन के कौस्तुभमणि से विभूषित वक्षस्थल पर इंद्रनीलमयी हारमाला की तरह सुशोभित और भगवान के चित्त में भी प्रेम का संचार करने वाली, कमल में निवास करने वाली माँ लक्ष्मी का कृपाकटाक्ष सदा मेरा कल्याण करे।

॥ श्लोक 6 ॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे –
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति –
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥६॥

हिंदी अर्थ: जिस प्रकार बिजली काले बादलों पर चमकती है, उसी प्रकार समस्त जगत की माता और भृगु-पुत्री भगवती महालक्ष्मी, मधु-कैटभ-विनाशक भगवान विष्णु के श्याम वक्षस्थल पर आभूषण की तरह प्रकाशित होती हैं। वह मुझे कल्याण और भद्रता प्रदान करें।

॥ श्लोक 7 ॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥७॥

हिंदी अर्थ: समुद्रकन्या माँ लक्ष्मी की उस मंद, अलस और अर्धखुली दृष्टि के प्रभाव से ही कामदेव ने भगवान मधुसूदन के हृदय में स्थान पाया था। वही पवित्र और मंगलकारी दृष्टि मेरे ऊपर भी पड़े।

॥ श्लोक 8 ॥

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा –
मस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥८॥

हिंदी अर्थ: भगवान श्रीहरि की प्रिया माँ लक्ष्मी के नेत्र रूपी मेघ, दया रूपी वायु से प्रेरित होकर, दुष्कर्मों की ग्रीष्म को दूर हटाते हुए, दुखी चातक पक्षी जैसे इस अकिंचन भक्त पर धन रूपी जलधारा प्रवाहित करें।

॥ श्लोक 9 ॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥९॥

हिंदी अर्थ: जो माँ सृष्टि के समय वाग्देवी (सरस्वती) के रूप में, पालन के समय गरुड़ध्वज भगवान विष्णु की प्रिया लक्ष्मी के रूप में और प्रलय के समय शशिशेखर भगवान शिव की वल्लभा शाकम्भरी के रूप में विराजमान रहती हैं - त्रिभुवन के एकमात्र गुरु की उस नित्ययौवना प्रिया को मेरा नमस्कार है।

॥ श्लोक 10 ॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥१०॥

हिंदी अर्थ: शुभकर्मों के फल देने वाली माँ श्रुति को नमस्कार है। सुंदर गुणों के सागर रूपी माँ रति को नमस्कार है। कमल में निवास करने वाली माँ शक्ति को नमस्कार है। पुरुषोत्तम भगवान विष्णु की प्रिया माँ पुष्टि को नमस्कार है।

॥ श्लोक 11 ॥

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥११॥

हिंदी अर्थ: कमल के समान मुखवाली माँ लक्ष्मी को नमस्कार है। क्षीरसागर से प्रकट होने वाली माँ को नमस्कार है। चंद्रमा और अमृत की बहन को नमस्कार है। भगवान नारायण की प्रिया माँ को नमस्कार है।

॥ श्लोक 12 ॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै ॥१२॥

हिंदी अर्थ: सुवर्ण कमल के आसन पर विराजमान माँ को नमस्कार है। भूमण्डल की स्वामिनी माँ को नमस्कार है। देवताओं पर दया करने वाली माँ को नमस्कार है। शार्ङ्गधारी भगवान विष्णु की प्रिया को नमस्कार है।

॥ श्लोक 13 ॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै ॥१३॥

हिंदी अर्थ: भृगु की पुत्री देवी माँ लक्ष्मी को नमस्कार है। भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर विराजमान माँ को नमस्कार है। कमल में निवास करने वाली माँ लक्ष्मी को नमस्कार है। दामोदर भगवान कृष्ण की प्रिया को नमस्कार है।

॥ श्लोक 14 ॥

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै ॥१४॥

हिंदी अर्थ: कमल जैसे नेत्रों वाली माँ कांति को नमस्कार है। समस्त भुवन की उत्पत्ति करने वाली माँ भूति को नमस्कार है। देवताओं द्वारा पूजित माँ को नमस्कार है। नंदपुत्र भगवान कृष्ण की प्रिया को नमस्कार है।

॥ श्लोक 15 ॥

सम्पत्करानि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु माङ्गल्यम् ॥१५॥

हिंदी अर्थ: हे कमलनयनी माँ लक्ष्मी! आपकी वंदना सम्पत्ति को बढ़ाने वाली, समस्त इंद्रियों को आनंदित करने वाली, साम्राज्य का ऐश्वर्य देने वाली और पापों का नाश करने वाली है। हे माता! आपकी ऐसी वंदना मुझे निरंतर मंगलमय बनाए।

॥ श्लोक 16 ॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः ।
सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥१६॥

हिंदी अर्थ: हे मुरारि के हृदय की स्वामिनी माँ! जिनके कटाक्ष की उपासना मात्र से सेवक को मन, वाणी और शरीर से सभी अभीष्ट संपत्तियाँ प्राप्त होती हैं - मैं उन आपकी भक्तिभाव से उपासना करता हूँ।

॥ श्लोक 17 ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥१७॥

हिंदी अर्थ: हे कमल में निवास करने वाली, कमल को हाथ में धारण करने वाली, श्वेत वस्त्र और सुगंधित पुष्पमालाओं से सुशोभित, भगवान हरि की प्रिया, तीनों लोकों का उद्धार करने वाली मनोहारिणी भगवती माँ लक्ष्मी! मुझ पर प्रसन्न होइए।

॥ श्लोक 18 ॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट –
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलाप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष –
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥१८॥

हिंदी अर्थ: दिग्गजों द्वारा स्वर्ण कलशों से आकाशगंगा के निर्मल जल से जिनका अभिषेक हो रहा है, समस्त लोकों के स्वामी भगवान विष्णु की गृहिणी, जगज्जननी और क्षीरसागर-सुता माँ लक्ष्मी को मैं प्रातःकाल प्रणाम करता हूँ।

॥ श्लोक 19 ॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥१९॥

हिंदी अर्थ: हे कमलनयन केशव की प्रिया कमले! आप अपनी करुणा से भरी तरंगायित दृष्टि से मुझ अकिंचन को देखें। मैं दरिद्रजनों में सर्वप्रथम दया का पात्र हूँ और आपकी करुणा प्राकृतिक है, कृत्रिम नहीं।

॥ श्लोक 20 ॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥२०॥

हिंदी अर्थ: जो लोग इन श्लोकों द्वारा तीनों लोकों की माता, त्रयी (तीनों वेदों) रूपिणी माँ लक्ष्मी की प्रतिदिन स्तुति करते हैं, वे पुण्यात्मा लोग इस संसार में गुणों से युक्त और महान भाग्यशाली होते हैं तथा विद्वानों में आदर पाते हैं।

॥ श्लोक 21 (फलश्रुति) ॥

सुवर्णधारास्तोत्रं यच्छंकराचार्यनिर्मितम् ।
त्रिसंध्यं यः पठेद्विद्वान् स कुबेरसमो भवेत् ॥२१॥

हिंदी अर्थ: आदि शंकराचार्य द्वारा रचित इस सुवर्णधारा (कनकधारा) स्तोत्र का जो विद्वान तीनों संध्याओं (प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल) में पाठ करता है, वह कुबेर के समान धनवान हो जाता है।

॥ इति श्रीमत् शंकराचार्य विरचित कनकधारा स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥